सत्यांश

सर्दी का पारा तटवर्ती भागों को छोड़कर सर्वत्र बढ़ने लगा है। वैसे भी यह दिसंबर महीना है। यदि जलवायु परिवर्तन न हो रहा होता, तो देश-विदेश के सर्दी पड़ने वाले स्थानों पर दिसंबर और जनवरी में सबसे अधिक सर्दी पड़ती। आज से पन्द्रह-बीस साल पहले तक दशहरे के समय स्वेटर, चादर, कंबल की जरूरत पड़ती थी। तब सितंबर से शुरू हुए जाड़े की आहट अक्टूबर में साफ दिखाई देती थी, लेकिन जलवायु परिर्वतन के कारण सर्दी की अवधि कम हुई है और मासवार थोड़ी आगे खिसक गई है। गर्मी का प्रकोप एवं उसके रहने का अंतराल बढ़ा है और बरसात अनियमित हो गई है। इसके कारण फसलों की बुआई-रोपाई का समय मजूबरीवश ही सही, पर बदला है; परंतु इसके पीछे का कारण वैज्ञानिक अनुसंधान पर आधारित मौसम-क्रम और फसल-चक्र में तालमेल का होना नहीं है। मौसम में आ रहा परिर्वतन अस्थायी जैसा ही है; परंतु कृषक लोग इससे सहज रूप में तालमेल बिठाकर और कदम मिलाकर थोड़ा-सा चल ही लेते हैं। इसका असर फसलों के उत्पादन पर साफ दिखाई दे रहा है। ऐसा नहीं है कि यह सब अनायास हो रहा है, बल्कि ऐसा संक्रमण निरंतर चलता रहता है, कभी इसका प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है, तो कई बार इसे समझना मुश्किल होता है या बहुत सूक्ष्म-दृष्टि की माँग करता है। सर्दी अब मैदानी भागों में दिसंबर के अंत में ही अधिक पड़नी शुरू होती है और मकर संक्रांति तक पड़ती है। इसका असर तब अधिक कष्टदायक होता है, जब सूर्य और उसकी धूप की गर्माहट कम या नहीं होती है। चाहे कितनी ही सर्दी हो; परंतु यदि धूप रहे तो सर्दी कम लगती है।

मौसम-वैज्ञानिकों एवं स्वास्थ्यकर्मियों से लेकर प्रकृति के रहस्य के जानकारों का मानना है कि सर्दी का मौसम अधिक स्फूर्तिदायक होता है। यह बात एक हद तक सही है क्योंकि यदि बहुत अधिक कड़ाके की ठंड न पड़ रही हो तो गर्मी और बरसात की अपेक्षा सर्दी में काम में मन अधिक लगता है। भीतर से व्यक्ति ऊर्जस्वित और आशान्वित महसूस करता है। इसके विपरीत गर्मी में अवसाद, नैराश्य, चिड़चिड़ाहट और अन्यमनस्कता आदि हावी हो जाया करती है। हल्की बरसात में भी उमस और अवसाद का वातावरण तैयार होता है। परंतु यह जलवायु और मौसम का सामान्य प्रभाव है। वैज्ञानिक खोजों व वैश्विक प्रगति ने एक तरफ सुख-सुविधाओं का अंबार खड़ा कर मौसम के प्रभाव को सीमित कर दिया है, तो दूसरी ओर निर्धन-गरीब-बेबस लोगों की संख्या बढ़ा दी है और सुख-साधनों के विकास-विस्तार ने बेबसों की बेबसी को अधिक मारक बना दिया है। मौसम के भीषण-वीभत्स रूपों से बचने का साधन ईजाद है तो वहीं असहाय लोगों की पीड़ा-व्यथा बढ़ाने वाले कारक भी बढ़े हैं। गरीबों पर तो सारे ही मौसम कहर की तरह बरपते हैं; परंतु सर्दी का प्रहार कुछ ज्यादा ही मारक होता है। गर्मी में कहीं भी खुले में बाग-बगीचा, पार्क, फुटपाथ, पेड़ के नीचे रहकर गुजारा किया जा सकता है, बारिश में भींगने पर भी उतनी हानि नहीं होती, जितनी सर्दी असहायजनों के लिए कष्टदायी होती है। वैसे लू लगने, बारिश और बिजली गिरने से भी लोग मरते हैं, लेकिन सर्दी में मृतक संख्या अधिक हो जाती है जो खासकर गरीब और विवश लोगों की होती है।

इसी सर्दी में भारतीय संसद का शीतकालीन सत्र शुरू हुआ है जो दिसंबर के तीसरे सप्ताह तक चलेगा। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के मुद्दे पर पहले संसद की कार्यवाही बाधित हुई, फिर नौकरियों में प्रमोशन में आरक्षण को लेकर संसद में हो-हल्ला होना तय है। एफडीआई पर सरकार ने राज्यसभा और लोकसभा दोनों में बाजी मार ली है। समाजवादी पार्टी व बहुजन समाज पार्टी दोनों ने सरकार को इस संकट से उबार दिया है। यह सब अनुमान के मुताबिक ही हुआ है।

हिमाचल प्रदेश एवं गुजरात का विधानसभा चुनाव परिणाम आने वाला है। दोनों ही जगह भाजपा व कांग्रेस मुख्य प्रतिद्वन्द्वी हैं, लेकिन तीसरे-चौथे दलों की उपस्थिति भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। मजे की बात यह है कि दोनों ही राज्यों में भाजपा से टूटकर नए दल बने हैं। हिमाचल में भाजपा से बागी होकर अलग चुनाव लड़ रहे हिमाचल लोकहित पार्टी से भी इतर गोविन्दाचार्य के नेतृत्व वाला दल भी पहली बार कहीं विधानसभा चुनाव लड़ रहा है। गुजरात में भाजपा के दिग्गज रहे केशुभाई पटेल व कुछ अन्य प्रमुख नेताओं द्वारा गुजरात परिवर्तन पार्टी बनाकर चुनाव लड़ा जा रहा है। ये लोग जनाधार वाले नेता रहे है; परंतु उनका जनाधार भी मुख्यतः भाजपा का जनाधार रहा है। अभी भी स्थानीय उम्मीदवारों को एकदम दरकिनार कर सीधे ऊपरी नेतृत्व को वोट नहीं दिया जाता। हालाँकि कई बार व्यक्ति-विशेष या पार्टी-विशेष के पक्ष में जब हवा होती है, तब उसके ऐसे-वैसे प्रत्याशियों का भी बेड़ा पार लग जाता है जो शायद अपने निर्वाचित नहीं हो सकते। इसलिए स्थानीय प्रत्याशी व प्रांतीय-राष्ट्रीय नेतृत्व में जितनी एकदिशा होती है, उतना ही परिणाम स्पष्ट होता है।

देखना यह है कि गुजरात परिवर्तन पार्टी और हिमाचल में भाजपा से बागी हुआ गुट कितना अपना जनाधार इस चुनाव में खड़ा कर पाता है। एक सीमा से अधिक यदि वे ऐसा करने में सफल हो जाते हैं तो फिर भाजपा को नुकसान उतना ही होगा और उसी अनुपात में कांग्रेस को फायदा। ठीक इसी तरह की स्थिति 2013 के कर्नाटक विधानसभा चुनाव में उत्पन्न होनी है, जहाँ मजबूत जनाधार वाले येदुउरप्पा की कर्नाटक जनता पार्टी विधानसभा चुनाव स्वतंत्र रूप से लड़ेगी। यह सब भाजपा में ही क्यों हो रहा है-शोचनीय है। यह राष्ट्रीय या प्रादेशिक नेतृत्व की शिथिलता या अक्षमता के कारण हो रहा है? यदि ऐसा है तो भाजपा नेतृत्व को इस पर ध्यान देना चाहिए, लेकिन यह आदत भाजपा नेता बहुत पहले भूल चुके हैं। इसलिए अनुमान यही है कि इस प्रकार की स्थिति अन्यत्र भी उत्पन्न होती रहेगी।

इस वर्ष अनेक नामी-गिरामी हस्तियों का देहावसान हुआ है, परंतु मरते तो रोज हजारों लोग हैं। चाहे उनका नामोल्लेख न हो, परंतु उनकी जान उतनी ही महत्त्वपूर्ण है, यही लोकतांत्रिक पुकार है। इसलिए अब तक दिवंगत हुई सभी आत्माओं को हार्दिक श्रद्धांजली। ✯